बाप समान

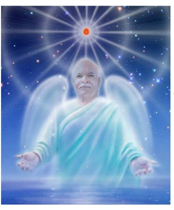
=
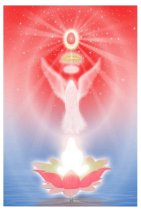

28-04-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

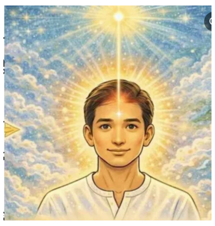

"मीठे बच्चे - बाप समान लवली बनने के लिए अपने को आत्मा बिन्दु समझ बिन्दु बाप को याद करो"

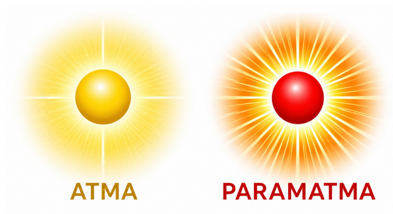

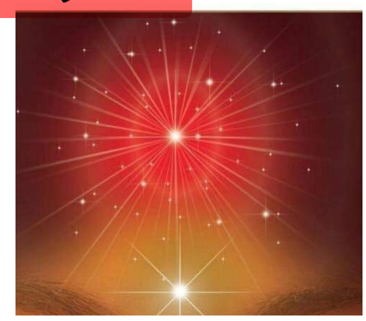

प्रश्नः-याद में रहने की गुप्त हड्डी मेहनत हर एक बच्चे को करनी है - क्यों?

One & Only way

उत्तर:-क्योंकि याद के बिगर आत्मा, पाप आत्मा से पुण्य आत्मा नहीं बन सकती। जब गुप्त याद में रहे, देही-अभिमानी बनें, तब विकर्म विनाश हों।

ये पक्का समझ लो..

Then only

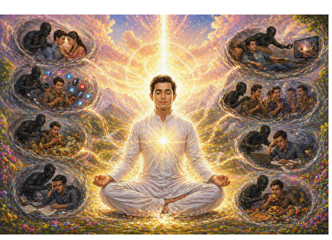

धर्मराज की सजाओं से बचने का साधन भी याद है। माया के तूफान याद में ही विघ्न डालते हैं इसलिए याद की गुप्त मेहनत करो तभी लक्ष्मी-नारायण जैसा लवली बन सकेंगे।

गीत:-ओम् नमो शिवाए... Click

ॐ नमः शिवाय
(Om Namah Shivaay)

Om..Namah..Shivay...
Pitu Matu Sahayak Swami Sakha..
Tum hi sab ke rakhwale ho..
Jiska koi aadhar nahi,
Uske tum ek sahare ho..
Pitu Matu Sahayak Swami Sakha..
Tum hi sab ke rakhwale ho...
{ music }

Teri leela aparampar Prabhu,
Teri mahima sab se nyari hai..
Jab jab dharti par paap badha,
Tu ne rituda dhari hai..
Is jeevan ke andhiyare me,
Bas ek tumhi ujayare ho..
{ music }

Ek naam tera hi saccha hai,
Baki sab jhoothi maya hai..
Jo apna sab kuch chhod chala,
Usne hi tumko paya hai..
Jis mann me tumhari bhakti jagi,

Uske tum ek sahare ho..
Pitu Matu Sahayak Swami Sakha..
Tum hi sab ke rakhwale ho..
Jiska koi aadhar nahi,
Uske tum ek sahare ho..
Pitu Matu Sahayak Swami Sakha...

ओम् शान्ति। यह महिमा है सबके बाप की। याद किया जाता है भगवान अर्थात् बाप को, उन्हें मात-

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

28-04-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

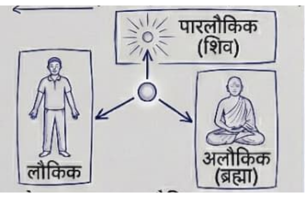

पिता कहते हैं ना। गॉड फादर भी कहा जाता है। ऐसे नहीं सब मनुष्यों को गॉड फादर कहेंगे। बाबा तो उनको (लौकिक बाप को) भी कहते हैं। लौकिक बाप जिसको कहते हैं वह भी फिर पारलौकिक बाप को याद करते हैं। वास्तव में याद करने वाली आत्मा है, जो लौकिक बाप को भी याद करती है। वह आत्मा अपने रूप को, आक्युपेशन को नहीं जानती है। आत्मा अपने को ही नहीं जानती तो गॉड फादर को कैसे जानेगी। अपने लौकिक फादर को तो सब जानते हैं, उनसे वर्सा मिलता है। नहीं तो याद क्यों करें। पारलौकिक बाप से जरूर वर्सा मिलता होगा। कहते हैं ओ गॉड फादर। उनसे रहम, क्षमा मागेंगे क्योंकि पाप करते रहते हैं। यह भी ड्रामा में नूँध है। परन्तु आत्मा को जानना और फिर परमात्मा को जानना, यह डिफीकल्ट सब्जेक्ट है। इज़ी ते इज़ी और डिफीकल्ट ते डिफीकल्ट। भल कितना भी साइन्स आदि सीखते हैं, जिससे मून तक चले जाते हैं। तो भी इस नॉलेज के आगे वह तुच्छ है। अपने को और बाप को जानना बड़ा मुश्किल है।

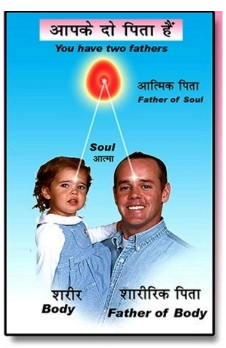

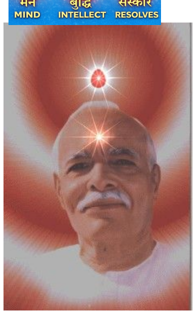

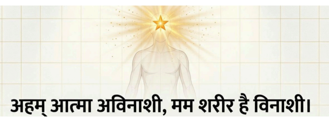

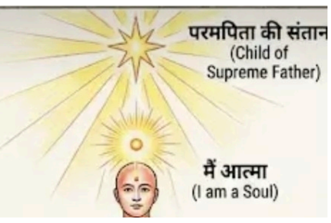

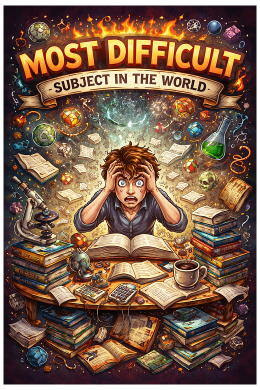

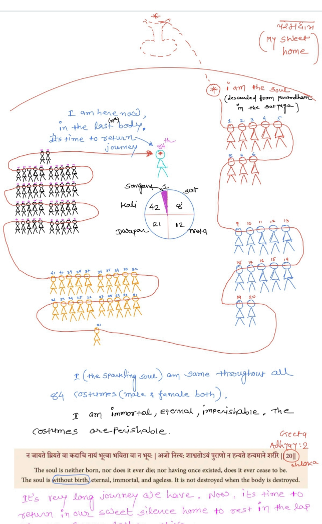

जो भी बच्चे अपने को ब्रह्माकुमार-कुमारी कहलाते हैं, वह भी अपने को आत्मा निश्चय करें। मैं आत्मा बिन्दी हूँ, हमारा बाप भी बिन्दी है - यह भूल जाते हैं। यह है डिफीकल्ट सब्जेक्ट। अपने को आत्मा भी भूल जाते तो बाप को याद करना भी भूल जाते। देही-अभिमानी बनने का अभ्यास नहीं है। आत्मा बिन्दी है, उनमें ही 84 जन्मों का पार्ट नूँधा हुआ है। जो मैं आत्मा भिन्न-भिन्न शरीर ले पार्ट बजाती हूँ, यह घड़ी-घड़ी भूल जाता है। मुख्य बात यही समझने की है। आत्मा और परमात्मा को समझने के सिवाए बाकी नॉलेज तो सबकी बुद्धि में आ जाता है। हम 84 जन्म लेते हैं, सूर्यवंशी, चन्द्रवंशी ... बनते हैं। यह चक्र तो बहुत सहज है। समझ जाते हैं। परन्तु सिर्फ चक्र को जानने से इतना फायदा नहीं है, जितना अपने को आत्मा निश्चय कर बाप को याद करने में फायदा है। मैं आत्मा स्टार हूँ। फिर बाप भी स्टार अति सूक्ष्म है। वही सद्गति दाता है। उनको याद करने से ही विकर्म विनाश होने हैं। इस तरीके से कोई भी निरन्तर याद नहीं करते। देही-अभिमानी नहीं बनते

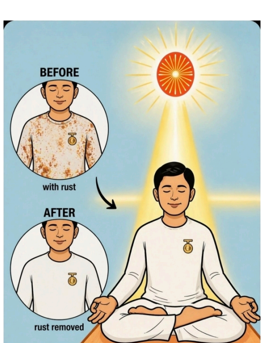

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

28-04-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

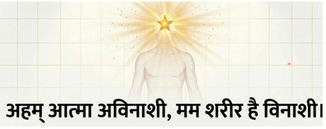

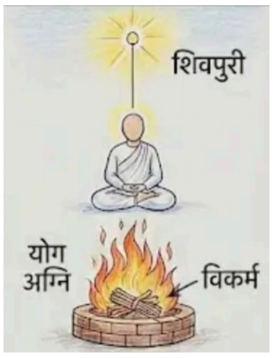

हैं। घड़ी-घड़ी यह याद रहे मैं आत्मा हूँ। बाप का फरमान है मुझे याद करो तो विकर्म विनाश होंगे। "मैं बिन्दी हूँ। यहाँ पार्टधारी आकर बना हूँ। मेरे में 5 विकारों की कट चढ़ी हुई है। आइरन एज़ में हैं। अब गोल्डन एज़ में जाना है इसलिए बाप को बहुत प्यार से याद करना है।" इस रीति बाप को याद करेंगे तब कट निकल जायेगी। यह है मेहनत। सर्विस की लबार तो बहुत मारते हैं। आज यह सर्विस की, बहुत प्रभावित हुए परन्तु शिवबाबा समझते हैं आत्मा और परमात्मा के ज्ञान पर कुछ भी प्रभावित नहीं हुआ। भारत हेविन और हेल कैसे बनता है। 84 जन्म कैसे लेते हैं, सतो रजो तमो में कैसे आते हैं। सिर्फ यह सुनकर प्रभावित होते हैं। परमात्मा निराकार है, यह भी समझ जाते हैं। बाकी मैं आत्मा हूँ, मेरे में 84 जन्मों का पार्ट भरा हुआ है। बाप भी बिन्दी है, उनमें सारा ज्ञान है। उनको याद करना है। यह बातें कोई भी समझते नहीं। मुख्य बात समझते नहीं हैं। वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी की नॉलेज बाप ही देते हैं। गवर्मेन्ट भी चाहती है कि वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी होनी

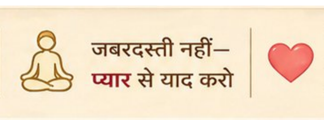

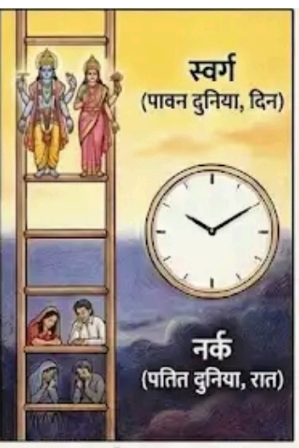

यह ५००० वर्ष का बना बनाया ड्रामा है। निर्विकारी दुनिया से सीढ़ी उतरकर विकारी दुनिया में आते हैं।

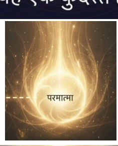

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

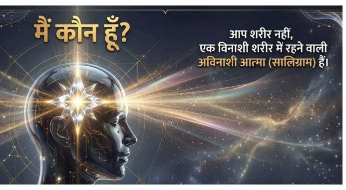

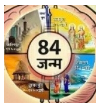

चाहिए। यह तो उनसे भी सूक्ष्म बातें हैं। आत्मा क्या है, उनमें कैसे 84 जन्मों का पार्ट है। वह भी अविनाशी है। यह याद करना, अपने को बिन्दी समझना और बाप को याद करना जिससे विकर्म विनाश हों - इस योग में कोई भी तत्पर नहीं रहते हैं। इस याद में रहें तो बहुत लवली हो जाएं। यह लक्ष्मी-नारायण देखो कितने लवली हैं। यहाँ के मनुष्य तो देखो कैसे हैं। खुद भी कहते हैं हमारे में कोई गुण नाहीं। हम जैसे मलेच्छ हैं, आप स्वच्छ हैं। जब अपने को आत्मा निश्चय कर बाप को याद करें तब सफलता मिले। नहीं तो सफलता बहुत थोड़ी मिलती है। समझते हैं हमारे में बहुत अच्छा ज्ञान है। वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी हम जानते हैं। परन्तु योग का चार्ट नहीं बताते हैं। मुश्किल कोई हैं जो इस अवस्था में रहते हैं अर्थात् अपने को आत्मा समझ बाप को याद करते हैं। बहुतों को अभ्यास नहीं है। बाबा समझते हैं कि बच्चे सिर्फ ज्ञान का चक्र बुद्धि में फिराते हैं। बाकी मैं आत्मा हूँ, बाबा से हमको योग लगाना है, जिससे आइरन एज़ से निकल गोल्डन एज़ में जायेंगे। मुझ आत्मा

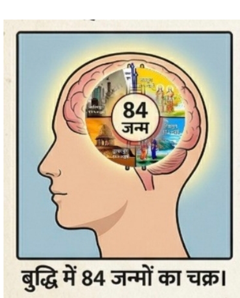

को बाप को जानना है, उसकी याद में ही रहना है, यह बहुतों का अभ्यास कम है। बहुत आते भी हैं। अच्छा-अच्छा भी कहते हैं। बाकी उनको यह पता नहीं पड़ता कि अन्दर कितनी कट लगी हुई है।

सुन्दर से श्याम बन गये हैं। फिर सुन्दर कैसे बने? यह कोई भी नहीं जानते हैं। सिर्फ हिस्ट्री-जॉग्राफी जानने का काम नहीं है। पावन कैसे बनें? सजा न खाने का उपाय है - सिर्फ याद में रहना। योग ठीक नहीं होगा तो धर्मराज की सज़ायें खायेंगे। यह बहुत बड़ी सब्जेक्ट है, जिसको कोई उठा नहीं सकते। ज्ञान में अपने को मियाँ मिट्ठू समझ बैठते हैं, इसमें कोई शक नहीं। मूल बात है योग की। योग में बहुत कच्चे हैं इसलिए बाप कहते हैं खबरदार रहो, सिर्फ पण्डित नहीं बनना है। मैं आत्मा हूँ, मुझे बाप को याद करना है। बाप ने फरमान दिया है - मनमनाभव। यह है महामन्त्र। अपने को स्टार समझ बाप को भी स्टार समझो फिर बाप को याद करो। बाप का कोई बड़ा रूप नहीं सामने आता है। तो देही-अभिमानी बनने में ही मेहनत है। विश्व के महाराजा महारानी एक

राम दुआरे तुम रखवारे होत न आज्ञा बिनु पैसारे।

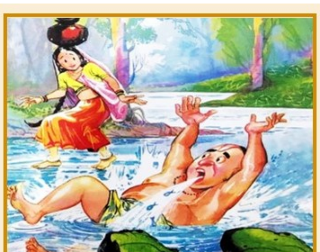
पंडित भगवान का नाम लेकर (जैसा कि वह उपदेश देता था) नदी पार करने में असफल रहा, जबकि ग्वालिन भगवान का नाम लेकर नदी पार कर गई

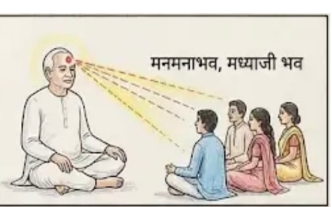

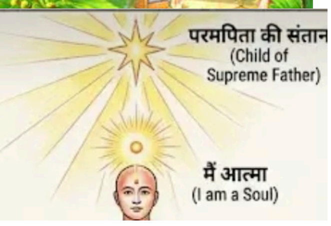

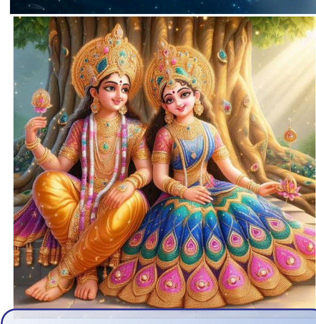

Point to be Noted

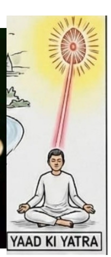

बनते हैं, जिनकी लाखों प्रजा बनती है। प्रजा तो बहुत है ना। हिस्ट्री-जॉग्राफी को जानना तो सहज है परन्तु जब अपने को आत्मा समझ बाप को याद करेंगे तब पावन बनेंगे। यह अभ्यास बड़ा डिफीकल्ट है। याद करने बैठेंगे तो बहुत तूफान विघ्न डालेंगे। कोई आधा घण्टा भी एकरस हो बैठे, बड़ा मुश्किल है। घड़ी-घड़ी भूल जायेंगे। इसमें सच्ची-सच्ची गुप्त मेहनत है। चक्र का राज़ जानना सहज है। बाकी देही-अभिमानी हो बाप को याद करना, यह मुश्किल कोई समझते हैं और उस एक्ट में आते हैं। बाप की याद से ही तुम पावन बनेंगे। निरोगी काया, बड़ी आयु मिलेगी। सिर्फ वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी समझाने से माला का दाना नहीं बन सकते। दाना बनेंगे याद से। यह मेहनत कोई से पहुँचती नहीं है। खुद भी समझते हैं कि हम याद में नहीं रहते। अच्छे-अच्छे महारथी इस बात में ढीले हैं। मुख्य बात समझाना आता ही नहीं है। यह बात है भी मुश्किल। कल्प की आयु इन्होंने बड़ी कर दी है। तुम 5 हजार वर्ष सिद्ध करते हो। परन्तु आत्मा-परमात्मा का राज़ कुछ भी नहीं जानते हैं,

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

याद ही नहीं करते हैं इसलिए अवस्था डगमगाती रहती है। देह-अभिमान बहुत है। देही-अभिमानी बनें तब माला का दाना बन सकें। ऐसे नहीं वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी समझाते हैं इसलिए हम माला में नजदीक आ जायेंगे, नहीं। "आत्मा इतनी छोटी है, इसमें 84 जन्मों का पार्ट भरा हुआ है।" इस बात को पहले-पहले बुद्धि में लाना है, फिर चक्र को याद करना है। मूल बात है योग की। योगी अवस्था चाहिए। पाप आत्मा से पुण्य आत्मा बनना है। आत्मा पवित्र होगी योग से। योगबल वाले ही धर्मराज के डन्डों से बच सकते हैं। यह मेहनत बड़ी मुश्किल कोई से होती है। माया के तूफान भी बहुत आयेंगे। यह बहुत हड्डी गुप्त मेहनत है। लक्ष्मी-नारायण बनना मासी का घर नहीं है। यह अभ्यास हो जाए तो चलते फिरते बाप की याद आती रहे, इसको ही योग कहा जाता है। बाकी यह ज्ञान की बातें तो छोटे-छोटे बच्चे भी समझ जायेंगे। चित्रों में सब युग आदि लगे हुए हैं। यह तो कॉमन है। जब कोई भी कार्य शुरू करते हैं तो स्वास्तिका लगाते हैं। यह निशानी है सतयुग, त्रेता... की बाकी ऊपर

गफलत में ना रहना...

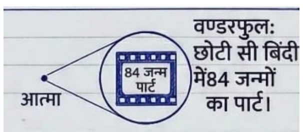

So, Be Prepared

समझा?

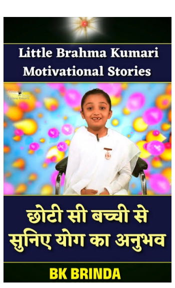

स्वस्तिक का आध्यात्मिक रहस्य

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

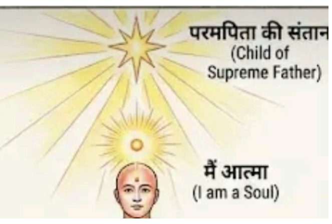

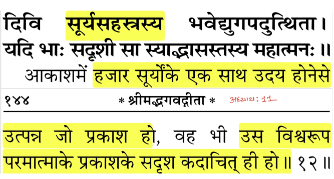
दिवि सूर्यसहस्त्रस्य भवेद्युगपदुत्थिता।
यदि भाः सदृशी सा स्याद्भासस्तस्य महात्मनः ॥
आकाशमें हजार सूर्योंके एक साथ उदय होनेसे
१४४ * श्रीमद्भगवद्गीता *
उत्पन्न जो प्रकाश हो, वह भी उस विश्वरूप परमात्माके प्रकाशके सदृश कदाचित् ही हो॥ १२ ॥

में है छोटा-सा संगमयुग। तो पहले अपने को आत्मा समझ बाप को याद करते रहेंगे तब ही वह शान्ति फैल सकती। योग से विकर्म विनाश होंगे। सारी दुनिया इस बात में भूली हुई है आत्मा और परमात्मा के बारे में, कोई कहते परमात्मा हजारों सूर्यों से तेजोमय है, परन्तु यह हो कैसे सकता। जबकि कहते हैं - आत्मा सो परमात्मा फिर तो दोनों एक हुए ना। छोटे बड़े का फर्क नहीं पड़ सकता। इस पर भी समझाना है। आत्मा का रूप बिन्दी है। आत्मा सो परमात्मा है तो परमात्मा भी बिन्दी ठहरा ना। इसमें फर्क तो हो न सके। सब परमात्मा हो जाएं तो सब क्रियेटर हो जाएं। सर्व की सद्गति करने वाला तो एक बाप है ना। बाकी तो हर एक को अपना पार्ट मिला हुआ है। यह बुद्धि में बिठाना पड़े, समझ की बात है। बाप कहते हैं मुझे याद करो तो कट निकल जायेगी। यह मेहनत है। एक तो आधाकल्प देह-अभिमानी हो रहे हो। सतयुग में देही-अभिमानी रहते भी बाप को नहीं जानते। ज्ञान को नहीं जानते। इस समय जो तुमको नॉलेज मिलती है वह नॉलेज गुम हो

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

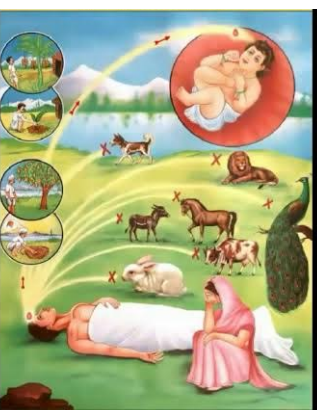

जाती है। वहाँ सिर्फ इतना जानते हैं कि हम आत्मा एक शरीर छोड़कर दूसरा लेते हैं। पार्ट बजाते हैं। इसमें फिकर की क्या बात है। हर एक को अपना-अपना पार्ट बजाना है। रोने से क्या होगा? यह समझाया जाता है अगर कुछ समझें तो शान्ति आ जाए। खुद समझेंगे तो औरों को भी समझायेंगे। बुजुर्ग लोग समझाते भी हैं, रोने से क्या वापिस थोड़ेही आयेंगे। शरीर छोड़ आत्मा निकल गई, इसमें रोने की क्या बात है। अज्ञानकाल में भी ऐसे समझते हैं। परन्तु वह यह थोड़ेही जानते हैं कि आत्मा और परमात्मा क्या चीज़ है। आत्मा में खाद पड़ी है, वह तो समझते आत्मा निर्लेप है। तो यह बहुत महीन बातें हैं। बाबा जानते हैं बहुत बच्चे याद में रहते नहीं हैं। सिर्फ समझाने से क्या होगा। बहुत प्रभावित हुआ, परन्तु इससे उसका कोई कल्याण थोड़ेही हुआ। आत्मा-परमात्मा की पहचान मिले तब समझें बरोबर हम उनके बच्चे हैं। बाप ही पतित-पावन है। हमको आकर दु:ख से छुड़ाता है। वह भी बिन्दी है। तो बाप को निरन्तर याद करना पड़े। बाकी हिस्ट्री-जॉग्राफी जानना

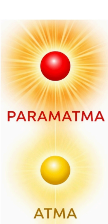

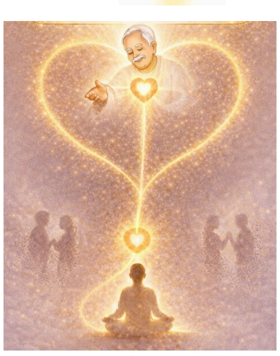

निरंतर का अर्थ है - सदा चलनेवाला।
निरन्तर का संधि विच्छेद नि: + अन्तर होता है।

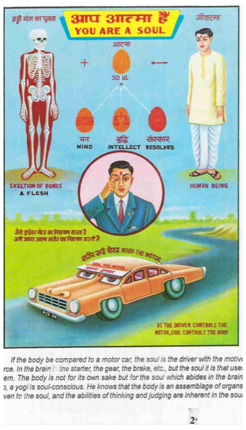

कोई बड़ी बात नहीं है। भल समझने लिए आते हैं परन्तु इस अवस्था में तत्पर रहे कि मैं आत्मा हूँ, इसमें ही मेहनत है। आत्मा परमात्मा की बात तो तुमको भी बाप ही आकर समझाते हैं। सृष्टि का चक्र तो सहज है। जितना हो सके उठते बैठते देही-अभिमानी बनने की मेहनत करनी है। देही-अभिमानी बहुत शान्त रहते हैं। समझते हैं मुझे साइलेन्स में जाना है। निराकारी दुनिया में जाकर विराजमान होना है। हमारा पार्ट अभी पूरा हुआ। बाप का रूप छोटा बिन्दी समझेंगे। वह कोई बड़ा लिंग नहीं है। बाबा बहुत छोटा है। वही नॉलेजफुल, सर्व के सद्गति दाता हैं। मैं आत्मा भी नॉलेजफुल बन रहा हूँ। ऐसा चिंतन जब चले तब ऊंच पद पा सकें। दुनिया भर में कोई आत्मा और परमात्मा को नहीं जानते।

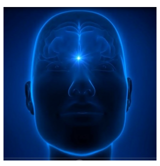

Characteristics of

But we know, How Lucky & Great we are..!

चढ़ाओ नशा...

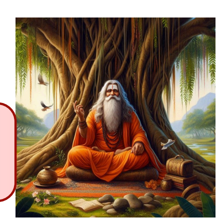

नेती - नेती

तुम ब्राह्मणों ने अब जाना है। संन्यासी भी नहीं जानते। न आकर समझेंगे। वह तो सब अपने-अपने धर्मों में ही आने वाले हैं। हिसाब-किताब

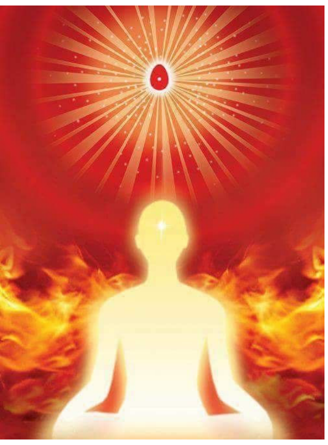

चुक्तू कर चले जायेंगे। तुमको ही यह मेहनत करने से बाप से वर्सा मिलेगा। अब फिर देही-अभिमानी बनना है। दिल तो आत्मा में है ना। आत्मा को ही दिल बाप से लगाना है। दिल शरीर में नहीं है। शरीर के तो सब स्थूल आरगन्स हैं। दिल को लगाना यह आत्मा का काम है। अपने को आत्मा समझ फिर परमात्मा बाप से दिल लगानी है।

Mind very well...

आत्मा बहुत सूक्ष्म है। कितनी छोटी सूक्ष्म आत्मा, पार्ट कितना बजाती है। यह है कुदरत। इतनी छोटी चीज़ में कितना अविनाशी पार्ट भरा हुआ है। वह कभी मिटने वाला नहीं है। बहुत सूक्ष्म है। तुम कोशिश करेंगे तो भी बड़ी चीज़ याद आ जायेगी।

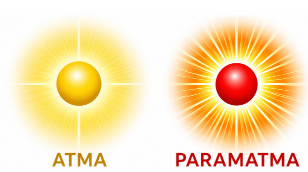

मैं आत्मा छोटा स्टार हूँ तो बाप भी छोटा है। तुम बच्चों को पहले-पहले मेहनत यह करनी है। इतनी छोटी सी आत्मा ही इस समय पतित बनी है। आत्मा को पावन बनाने का पहले-पहले यह उपाय है। पढ़ाई पढ़नी है। बाकी खेलना, कूदना तो अलग बात है। खेलने का भी एक हुनर है। पढ़ाई से मर्तबा मिलता है। खेल कूद से मर्तबा नहीं मिलता है। खेल आदि की डिपार्टमेन्ट अलग होती है।

28-04-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

उनसे ज्ञान वा योग का कनेक्शन नहीं है। यह भोग आदि लगाना भी खेल है। मुख्य बात है याद की। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का यादप्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

1) धर्मराज की सजाओं से बचने के लिए याद की गुप्त मेहनत करनी है। पावन बनने का उपाय है अपने को आत्मा बिन्दी समझ बिन्दु बाप को याद करना।

मियां मिट्ठू

2) ज्ञान में अपने आपको मिया मिट्ठू नहीं समझना है, एकरस अवस्था बनाने का अभ्यास करना है। बाप का जो फरमान है उसे पालन करना है।

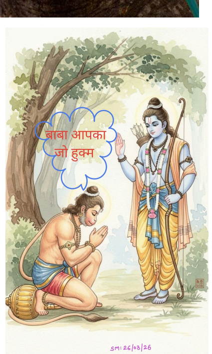

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

28-04-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा"

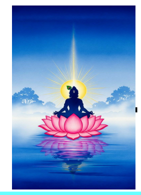

वरदान:- हर कर्म करते हुए कमल आसन पर विराजमान रहने वाले सहज वा निरन्तर योगी भव

निरन्तर योगयुक्त रहने के लिए कमल पुष्प के आसन पर सदा विराजमान रहो लेकिन कमल आसन पर वही स्थित रह सकते हैं जो लाइट हैं। किसी भी प्रकार का बोझ अर्थात् बंधन न हो। मन के संकल्पों का बोझ, संस्कारों का बोझ, दुनिया के विनाशी चीज़ों की आकर्षण का बोझ, लौकिक सम्बन्धियों की ममता का बोझ - जब यह सब बोझ खत्म हों तब कमल आसन पर विराजमान निरन्तर योगी बन सकेंगे।

स्लोगन:- सहनशीलता का गुण धारण कर लो तो असत्यता का सहारा नहीं लेना पड़ेगा।

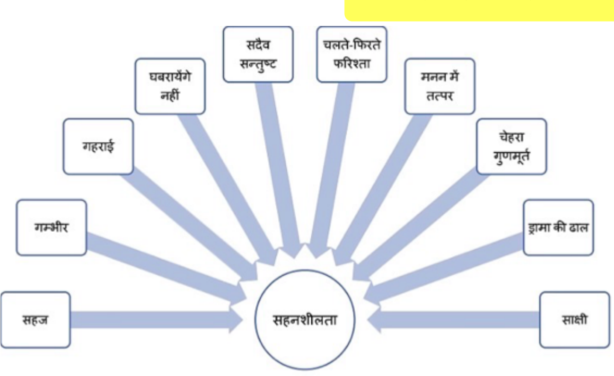

ान योग धारणा सेवा M.imp.

28-04-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

ये अव्यक्त इशारे -

महान बनने के लिए

मधुरता और नम्रता का गुण धारण करो

किसके संस्कार सरल, मधुर होते हैं तो वह संस्कार स्वरूप में आते हैं।

जब संस्कार बापदादा के समान बन जायेंगे तो बापदादा के स्वरूप सभी को देखने में आयेंगे।

जैसे बापदादा वैसे हूबहू वही गुण, वही कर्तव्य, वही बोल, वही संकल्प अनुभव होंगे। सभी के मुख से निकलेगा "यह तो वही लगते हैं।"

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

If you wish to stay connected, Here is the link

TELEGRAM

WhatsApp

WORLD WIDE WEB

BKdrluhar

From Avyakt
Murli dtd :- 12/04/2026

Again & Again

वरदान का फल निकालने के लिए बार-बार वरदान को स्मृति में लाओ। स्मृति स्वरूप के स्थिति में

What is difference between

All वरदान of March'26

Click

All अव्यक्त इशारे of March'26

Click

इसके द्वारा आप बीच में जब भी समय मिले तो Revise करके स्मृति स्वरूप बन सकोगे

वरदान का फल निकालने के लिए बार-बार वरदान को स्मृति में लाओ।
स्मृति स्वरूप के स्थिति में स्थित रहो।
AV: 30/11/2009
Revise: 12/4/26